By. Suneeta Kumari
Deptt. of History
J. N. C. Madhubani

B.A. History (H)
Paper - II
Degree - II

तुर्कों के आक्रमण समय भारत की राजनीतिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

(Describe the Political Conditions of India during Turkis Invasion)

तुर्कों के आक्रमण के समय उत्तर भारत छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था। राजनीतिक एकता का अभाव था और कोई ऐसा शक्तिशाली राज्य नहीं था जो उत्तर सीमा की रक्षा कर सकता। महमूद गजनवी के आक्रमणों के बाद भी राजनीतिक विखण्डन की स्थिति बनी हुई थी। पंजाब को महमूद ने जीत लिया था। उसे राजपूतों ने पुनः प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया। इसी को आधार बनाकर तुर्कों ने भारत के आन्तरिक प्रदेशों पर आक्रमण कर दिया। एक सार्वभौम सत्ता के अभाव में आक्रमणकारियों का कार्य सरल हो गया। सारा देश निम्नानुसार छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटा हुआ था:-

1. पंजाब:- पंजाब और सीमान्त प्रदेशों को महमूद गजनवी ने गजनी साम्राज्य में मिलाया था। जब सन् 1160 ई० में गुज तुर्कों ने गजनी पर अधिकार कर लिया, उस समय गजनवी शासक खुसरवशाह पंजाब भाग आया। अब गजनवी शासकों के पास केवल पंजाब शेष रह गया था। अतः पतनशील गजनी राजवंश सन् 1186 ई० तक पंजाब में राज करता रहा। सन् 1186 ई० में मुहम्मद गौरी ने लाहौर पर कब्जा करके इस राजवंश को समाप्त कर दिया।

2. मुल्तान:- उत्तरी सिन्ध में मुल्तान राज्य को महमूद गजनवी ने जीता था। यहाँ शिया मतावलम्बी मुस्लिम शासक था। महमूद की मृत्यु के पश्चात् इन शासकों ने स्वयं को

स्वतंत्र घोषित कर दिया। मुहम्मद गौरी ने सन् 1175 ई० में इसे जीत लिया।

3. सिन्ध :— निचले सिन्ध को सुल्तान महमूद ने जीत लिया था लेकिन उसकी मृत्यु के बाद सिन्ध पुनः स्वतंत्र हो गया और सुमरा नाम की स्थानीय जाति अपर अपनी सत्ता स्थापित कर ली। सुमरा लोगों के विषय में अधिक ज्ञात नही है। वे लोग मुसलमान थे और सम्भवतः शिया मतावलम्बी थे।

4. अन्हिलवाड़ा के चालुक्य :— उत्तर भारत मे अन्य राज्य राजपूतों के थे। पश्चिम भारत में चालुक्य राजपूतों का राज्य था। उनकी राजधानी अन्हिलवाड़ा था। इस राजवंश का प्रतापी राजा सिद्धराज जयसिंह था। इन चालुक्य शासकों का मालवा के परमार, अजमेर के चौहान और चित्तौड़ के गुहिलों से सदैव युद्ध होता रहता था।

5. अजमेर के चौहान :— इस राजवंश का उत्थान अजयपाल के शासनकाल में हुआ। सन् 1153 ई० मे इस राजवंश के शासक विग्रहराज तृतीय ने तोमरों से दिल्ली छिनकर चौहान राज्य की सीमा सतलज तक बढ़ा दी थी।

6. कन्नौज के गहड़वाल :— इस राजपूत वंश का राज्य आधुनिक उत्तरप्रदेश मे था। इसकी राजधानी कन्नौज और वराणसी थी। इनके राज्य में काशी, कौशल, प्रयाग, दिल्ली प्रदेश था। इस वंश का प्रतापी शासक गोविन्दचन्द्र था। गहड़वालों का प्रमुख योगदान यह था कि चौहानों के उत्थान के पूर्व उनके राज्य की सीमा सतलज तक थी और उन्होंने गजनवी सेनापतियों का सामना किया था।

7. बुन्देलखंड के चन्देल :- जैजाकभुक्ति के चन्देलों ने महमूद गजनवी का दो बार सामना किया था। इस राजवंश के शक्तिशाली राजा धंग, गंड और विद्याधर थे। चौहानों और गहड़वालों के उत्थान के बाद चन्देल राजवंश की स्थिति दुर्बल हो गयी। चन्देलों को सभी राजपूत पड़ोसी राज्यों से युद्ध करना पड़ा था। मालवा के परमार, चेदि के कलचुरी, कन्नौज के गहड़वाल शासकों से उनके युद्ध हुए थे।

8. चेदि के कलचुरि :- चेदि या डाहाल के कलचुरि राजवंश का प्रतापी शासक गांगेयदेव सन् (1019-1040ई०) था। इन राजाओं के चन्देल, परमार, चालुक्य राजाओं से संघर्ष होते रहते थे। इस प्रकार युद्धों के कारण कलचुरी कभी भी शक्तिशाली नहीं बन सके। गांगेयदेव के पुत्र और उत्तराधिकारी लक्ष्मीकर्ण के बाद कलचुरी निर्बल हो गये। 12वीं शताब्दि के अंत में कलचुरी चन्देलों के अधीनस्थ सामन्त बन गये थे।

9. मालवा के परमार :- मुहम्मद गौरी के भारतीय अभियानों के समय मालवा के परमार शासक बहुत दुर्बल थे। इस समय इस वंश का शासक चालुक्यों के अधीनता में सामन्त था। सन् 1305 ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा को सल्तनत में मिला लिया था।

10. बंगाल के सेन :- दक्षिण बंगाल में सेन राज्य का प्रतापी राजा विजय सेन था। इस वंश के अन्तिम शासक बल्लाल सेन और लक्ष्मण सेन थे। सन् 1200ई० के लगभग तुर्कों ने बख्तियार खिलजी के नेतृत्व में सेन राज्य को अपने अधीन कर लिया था।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि गौरी के आक्रमण के समय उत्तर भारत छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था जिससे विदेशी आक्रमणों का सामना सही ढंग से नहीं कर सका।

End